भजन

तर्ज– करवटें बदलते रहे सारी

अब तो जाहिर हो गए देखो पूर्णब्रह्म
जो है सच्चिदानंद

1– सुध बिना संसार में ना कोई हुआ बेशक
खोज – खोज सब थके रही दिलों में शक
तारतम किल्ली ले आए आप खुद खसम

2– जागृत बुध से भेद सारे ग्रंथों के खोल दिए
निजबुध से धाम के भेद वाणी में कहें
अब तो सब देखेंगे नजरों आया हक इलम

3– अब जो ना पहचाने उनको होगा उनपे ही गुनाह
कमी ना कोई रखी धनी ने ऐसे हैं वो मेहरबान
हमें वो समझा रहे हैं माया और ब्रह्म